टिप्पणी

7

आज़ादी

आप कभी-कभी यह सोचते होंगे कि कितना अच्छा होता यदि आपको अपने ढंग से जीने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता। जब कभी आपको कोई टोकता है, तो आपको बुरा लगता होगा। आप शायद नाराज़ भी होते होंगे उस पर। आप पर किसी तरह का बंधन न होता, तो आप अपनी मर्ज़ी के मालिक होते। जैसा आप चाहते, वैसा कर पाते। जहाँ घूमना-फिरना चाहते, अपनी इच्छा के अनुसार कर पाते। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि कुछ पाने के लिए मेहनत आवश्यक है। कुछ बनने के लिए अनुशासन ज़रूरी है। आज जिसे आप आज़ादी समझ रहे हैं, वह कल अनुशासन के अभाव में बंधन बन सकती है। किसी भी व्यक्ति के लिए आज़ादी के क्या मायने होते हैं? आज़ादी के संदर्भ में उसकी क्या-क्या जिज्ञासाएँ होती हैं? आइए, इन सवालों से परिचित होने के लिए मलयालम के प्रतिनिधि कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड की कविता का आनंद उठाएँ।

उद्देश्य

इस कविता को पढ़ने के बाद आप–

- आज़ादी के सीमित और व्यापक संदर्भों की व्याख्या कर सकेंगे;
- साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का आज़ादी से संबंध स्थापित कर सकेंगे;
- जीवन में अभिव्यक्ति के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- ज्ञान, कर्म, बलिदान और जीवन का कारण-कार्य संबंध स्पष्ट कर सकेंगे;
- आज़ादी के संदर्भ में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-7.1

आप अपने पड़ोस में जाकर कुछ किशोरों को इकट्ठा कीजिए। उनकी पसंद-नापसंद के बारे में बातचीत कीजिए। बातचीत के क्रम में उनसे पूछिए कि उनके सपने क्या हैं? वे आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं? उनकी कौन-सी समस्याएँ हैं? सूचनाओं को इकट्ठा कर लेने के बाद सामान्य समस्याओं का विश्लेषण कीजिए:

नाम	सपने	समस्याएँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

विश्लेषण: ....

....

....

7.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ते हैं। आपकी सुविधा के लिए कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

आज़ादी

''उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?''
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने,
''क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अँधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?

चित्र 7.1

शब्दार्थ

उस्ताद- गुरु
शागिर्द- शिष्य, चेला
चरागाह- पशुओं के चरने का स्थान
बछड़ा- गाय का बच्चा
दिशा- ओर, तरफ़
मुसाफ़िर- यात्री
लैंपपोस्ट- बिजली का खंभा
निश्चिंत- बेफ़िक्र, बिना चिंता के

या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से गतिमान पहिए
और कभी न रुकने वाली सुई से मेरी मुक्ति?''

दर्जी ने जवाब दिया:
''आज़ादी का मतलब है- भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

चित्र 7.2

मूल लेखक : बालचंद्रन चुल्लिक्काड
अनुवाद : असद ज़ैदी

शब्दार्थ
अनंत- असीम, जिसका अंत न हो
शाश्वत- नित्य, जो सदा बना रहे
मुक्ति- बंधन से छूटने की अवस्था या भाव
तनहाई- अकेलापन
महफ़िल- सभा, जलसा
पनाह- रक्षा, बचाव
कर्मठ- काम में लगे रहनेवाले
बलिदान - त्याग
बलिदानी- बलिदान करने वाला
उलझन- बाधा, समस्या, चिंता

7.2 आइए समझें

आइए, अब हम कविता के पहले अंश का भाव समझने के लिए इसे एक बार फिर से पढ़ लें।

टिप्पणी

7.2.1 अंश-1

जैसा कि आपने पढ़ा, इस कविता में दर्जी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? इस सवाल के साथ-साथ शागिर्द ने अपनी ओर से कई संदर्भों का वर्णन करके आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। उसने अपने गुरु के सामने यह जिज्ञासा रखी कि क्या चरागाह में नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाने, बेफ़िक्र और ख़ुश रहने अर्थात उच्छृंखलता का नाम आज़ादी है? दूसरा संदर्भ देते हुए शागिर्द कहता है- लगभग असंभव समझे जाने वाले काम को पूरा करने के दुस्साहस को आज़ादी कहा जा सकता है? सूरज में घोंसला बनाने के लिए उड़ान भरने वाली चिड़िया का काम कुछ ऐसा ही है। शागिर्द ने यह भी पूछा कि कहीं उत्तर दिशा में सीटी बजाते हुए तेज़ भागती रेलगाड़ी का नाम तो आज़ादी नहीं? यहाँ आपके मन में सवाल उठ सकता है कि रेलगाड़ी किसी अन्य दिशा में क्यों नहीं जा रही है? सिर्फ उत्तर दिशा की ओर क्यों? दरअसल, यह कविता मलयालम में लिखी गई है, जो केरल की भाषा है। कवि भारत के दक्षिणी हिस्से का है, इसलिए वह रेलगाड़ी उत्तर दिशा में भागने की बात का उल्लेख करता है। केरल से चलने वाली रेलगाड़ी केवल उत्तर दिशा की ओर ही जा सकती है, क्योंकि केरल की बाकी तीनों दिशाओं में समुद्र है।

चित्र 7.3

चित्र 7.4

चित्र 7.5

वैसे यहाँ पर कवि शागिर्द के माध्यम से उस्ताद से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आजादी है? वास्तव में कुछ लोग खासतौर पर बारह-तेरह वर्ष की उम्र के किशोर घूमने-फिरने, सैर-सपाटे को ही आजादी मानते हैं, इसलिए शागिर्द का यह प्रश्न अनुचित नहीं है। अपने अगले प्रश्न में शागिर्द पूछता है कि क्या अंधेरे में भटकने वाले को लैंपपोस्ट मिल जाए तो उसकी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं? इस प्रश्न को यों समझिए कि हम किसी यात्रा पर निकलें और यात्रा के दौरान अंधेरा हो जाए। अंधेरे में कहीं आश्रय मिल जाए और हम रुक जाएँ। क्या यह कुछ समय के लिए रुकना यात्रा का अंत हो सकता है? ठीक उसी प्रकार शागिर्द यह पूछ रहा है कि क्या मुसाफिर का अंधेरे में किसी लैंप पोस्ट के नीचे रुकना आजादी है? मंज़िल की प्राप्ति है? आज़ादी के बारे में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए वह फिर पूछता है कि क्या निश्चिंत अर्थात् बेफ़िक्र होकर सो जाने का दूसरा नाम

चित्र 7.6

"उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?"
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने।
क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अंधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
- वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?
या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से
गतिमान पहिए
और कभी न रुकनेवाली सुई से मेरी
मुक्ति?

आज़ादी है? इस तरह पाँच प्रकार के संदर्भों का उल्लेख करने के बाद कविता का मूल बिंदु सामने आता है। यहाँ शागिर्द के मन में जो प्रश्न उभरे हैं वे उसकी चिंतन-क्षमता को बता रहे हैं। शागिर्द अपनी मुक्ति या आज़ादी के बारे में पूछता है कि अनंत कपड़ों के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम तो आज़ादी नहीं है? आशय यह है कि क्या कर्म से मुक्ति ही आज़ादी है? ज़रा सोचिए कि क्या आपके मन में भी देश में आज़ादी किस प्रकार की होनी चाहिए, इसके बारे में तरह-तरह के विचार नहीं आते? लेखक की आज़ादी की व्याख्या के बारे में आप क्या सोचते हैं?

टिप्पणी

- कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से यह पता चलता है कि हमारे समाज में आज़ादी को अनेक संदर्भों में देखा जाता है। कभी-कभी उन्मुक्तता, उच्छृंखलता, मनमर्जी, सैर-सपाटे, गैर-जिम्मेदारी, तात्कालिक तथा सीमित लाभ और कर्महीनता को ही आज़ादी मान लिया जाता है। ये सारे संदर्भ व्यक्तिगत और मामूली आनंद से प्रेरित हैं। आज़ादी का अर्थ ज़िम्मेदारी का भाव भी लिए है, जबकि उपर्युक्त संदर्भ गैर जिम्मेदारी लिए हुए हैं। शागिर्द अपने आस-पास आजादी के जितने संदर्भ देखता है, उनका वर्णन करते हुए उस्ताद से पूछता है कि क्या ये सब आजादी के विभिन्न रूप हैं, या आजादी कुछ और है।

क्रियाकलाप-7.2

- आपने कविता में 'अनंत' और 'गतिमान' शब्दों को पढ़ा। उनमें पहले शब्द 'अनंत' में अन् उपसर्ग लगा है जबकि दूसरे शब्द गतिमान में 'मान' प्रत्यय है। यानी कुछ शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, आइए, शब्द-निर्माण के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करें।

1. शब्द निर्माण का कार्य उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास के माध्यम से किया जाता है।

    (i) उपसर्ग उन्हें कहते हैं जो शब्द के पहले लगते हैं और अर्थ को बदल देते हैं; जैसे:- 'हार' शब्द के पहले 'उप' लगकर उपहार बन जाता है।

    आपने देखा कि 'हार' शब्द में प्र (प्रहार), आ (आहार), वि (विहार) आदि लग जाने से शब्द भी नया शब्द बन गया और अर्थ में परिवर्तन आ गया।

    (ii) शब्द निर्माण का दूसरा आधार है- प्रत्यय।

    प्रत्यय शब्द के पीछे लगता है और अर्थ में परिवर्तन कर देता है।

    जैसे- मूर्ख + ता = मूर्खता, वर्ष + इक = वार्षिक।

(iii) तीसरा आधार है संधि।

दो वर्णों के मेल को संधि कहा जाता है; जैसे–

सूर्योदय, इत्यादि, विद्यालय, चंद्रोदय। इनका विच्छेद होगा–सूर्य + उदय, इति + आदि, विद्या + आलय, चंद्र + उदय।

(iv) चौथा आधार है समासः

दो शब्दों के मेल को समास कहते हैं, जैसे रसोईघर, पीतांबर, माता-पिता, रेलगाड़ी। इनका विग्रह होगा- रसोई के लिए घर, पीला है अंबर जिसका, माता और पिता, रेल पर चलने वाली गाड़ी।

2. शब्द-भंडार :- शब्द-भंडार में पर्यायवाची, विलोम शब्द, एकार्थक, अनेकार्थक, वाक्यांश के लिए एक शब्द आते हैं। कविता को समझने के लिए शब्द निर्माण तथा शब्द भंडार दोनों जरूरी हैं।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए :

(क) उपसर्ग छाँटिए

पराभव, अनुशासन, बेवजह, प्रत्युत्तर

....

(ख) प्रत्यय छाँटिए :

साप्ताहिक, खटिया, गरमाहट

....

(ग) संधि-विच्छेद कीजिए :

पुस्तकालय, सूर्योदय, अत्यंत, प्रत्युत्तर

....

(घ) विग्रह कीजिए :

देश प्रेम, दही-बड़ा, दाएँ-बाएँ, चतुर्भुज

....

टिप्पणी

7.2.2 अंश-2

आइए, अब हम पाठ के दूसरे अंश को समझने से पहले उन्हें पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ लें जो हाशिए में दिया गया है।

आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य होगी कि शागिर्द के प्रश्न का दर्जी ने क्या उत्तर दिया। शागिर्द के सवाल को दर्जी ने ध्यानपूर्वक सुना। दर्जी के पास गहरे अनुभव हैं। उसने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि मूलभूत, अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। मूलभूत ज़रूरतें हैं– रोटी, कपड़ा और मकान। भूखे को खाना, प्यासे को पानी, ठंड से पीड़ित के लिए राहत पहुँचाने वाले ऊनी वस्त्र, थके-माँदे के लिए बिस्तर ही आज़ादी है।

दर्जी ने जवाब दिया:
"आज़ादी का मतलब है- भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

इसके बाद दर्जी ने शागिर्द से कहा कि आज़ादी एक अभिव्यक्ति है जिसका माध्यम शब्द है। क्या आप जानते हैं कि शब्द या अभिव्यक्ति का आज़ादी से क्या संबंध है। जो हमें उचित या अनुचित लगता है और हम उसे सच्चाई से शब्दों में अभिव्यक्त न कर पाएँ तो हम स्वतंत्र नहीं है, इसलिए हमारे समाज और देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात प्रायः की जाती है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि जो हमें ठीक लगे और जिसे कहना समाज-हित में आवश्यक हो, वह हम अवश्य कहें। इसके लिए कभी-कभी साहस भी करना पड़ता है। शिकारी के लिए तीर के कमान आज़ादी एक साधन है। शिकारी का तो अस्तित्व ही नहीं है यदि उसके पास तीर न हो तो। कवि यहाँ पर कहना चाहता है कि जीवन के लिए अनिवार्य साधन का होना भी आज़ादी है। अकेलेपन के कष्ट से मुक्त होना, भय से मुक्त होना भी आज़ादी है।

अगली पंक्तियों में कवि ने ज्ञान, कर्म और बलिदान के कार्य-कारण संबंध को स्पष्ट किया है। ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। अज्ञानी के लिए ज्ञान प्राप्ति ही आज़ादी है। कहा भी जाता है कि ज्ञान हमें मुक्त करता है। यहाँ मुक्त करने का आशय है- सोचने-विचारने की क्षमता को विस्तार देना, ऐसा विस्तार जो व्यक्ति को संकीर्ण या ओछी बातों से मुक्त करके विशाल-हृदय वाला बनाता है। लेकिन ज्ञान कभी निष्क्रिय नहीं बनाता। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। यदि हम ज्ञान को कर्म में नहीं बदलेंगे तो ज्ञान निरर्थक एवं आंतरिक ही रहेगा उसका लाभ दूसरों को नहीं मिल पाएगा। ज्ञान को कर्म में बदलने वाले को ही कर्मठ कहा जाता है। आप जानते ही हैं कि हमारे देश की आज़ादी के लिए जो महान् लोग लड़े थे उन्हें पहले यह ज्ञान हुआ था कि हम गुलाम हैं, हमें आज़ाद होना चाहिए, इसके बाद वे इस